बहते रहिए, मंजिल जरूर मिलेगी

डॉ. मुकेश नायक

कोई असाधारण परिवर्तन एक ही दिन में नहीं होता. लेकिन यदि आप हर दिन अपना काम करते रहेंगे, तो एक दिन कुछ ऐसा अवश्य होगा जो आपके पूरे जीवन को बदल सकता है. अपना कर्तव्य करते रहिए. समय पर भरोसा रखिए. प्रक्रिया पर विश्वास कीजिए. और सबसे बढ़कर रुकिए मत. क्योंकि यात्रा चाहे कितनी भी लंबी क्यों न हो, जो नदी बहना नहीं छोड़ती, वह एक दिन समुद्र तक अवश्य पहुँचती है.

सरिता जल जलनिधि महँ जाई. होई अचल जिमि जीव हरि पाई॥

यह कालजयी पंक्ति जीवन का एक अत्यंत गहरा और प्रेरणादायक संदेश देती है. जिस प्रकार एक छोटी-सी नदी अपनी यात्रा शुरू करती है, रास्ते में आने वाली चट्टानों, मोड़ों और बाधाओं को पार करती हुई अंततः विशाल समुद्र में जाकर मिल जाती है, उसी प्रकार मनुष्य का जीवन भी एक निरंतर यात्रा है. शुरुआत भले ही छोटी हो, रास्ता कठिन हो और परिस्थितियाँ प्रतिकूल हों, लेकिन जो व्यक्ति अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना नहीं छोड़ता, वह एक दिन अपनी मंजिल तक अवश्य पहुँचता है.

जीवन की हर बड़ी उपलब्धि समय मांगती है. एक विशाल वृक्ष एक दिन में खड़ा नहीं हो जाता. एक छोटे से बीज को उपयुक्त मिट्टी, पानी, धूप और धैर्य की आवश्यकता होती है. उसी प्रकार हमारी मेहनत का परिणाम तुरंत दिखाई न दे तो इसका अर्थ यह नहीं कि प्रयास व्यर्थ जा रहे हैं. कई बार सफलता की प्रतीक्षा के दौरान हमारी मेहनत हमें उसी सफलता को संभालने के योग्य बना रही होती है. मनुष्य की सबसे बड़ी भूलों में से एक है अपनी कठिनाइयों की तुलना किसी दूसरे व्यक्ति की सफलता से करना. हम किसी को मंजिल पर खड़ा देखते हैं, लेकिन उस मंजिल तक पहुँचने की उसकी पूरी यात्रा नहीं देख पाते. उसके संघर्ष, जागकर बिताई गई रातें, असफलताएँ, त्याग, निराशाएँ और वर्षों की मेहनत अक्सर हमारी नजरों से ओझल रहती हैं. हर व्यक्ति का रास्ता अलग होता है और सफलता भी हर किसी के जीवन में अलग समय पर आती है. नदी जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाती है. पहाड़ों से निकलते समय उसे यह नहीं पता होता कि वह समुद्र तक कब पहुँचेगी. रास्ते में चट्टानें आती हैं, मोड़ आते हैं और अनेक अवरोध खड़े होते हैं. कभी उसका प्रवाह धीमा होता है तो कभी वह पूरे वेग से आगे बढ़ती है. लेकिन वह रुकती नहीं है. परिस्थितियों के अनुसार वह अपना रास्ता बदल सकती है, पर अपनी मंजिल नहीं बदलती. जीवन में भी हमें यही दृष्टिकोण अपनाना चाहिए. यदि एक रास्ता बंद हो जाए तो उम्मीद छोड़ने की आवश्यकता नहीं है. संभव है कि जीवन हमें किसी दूसरे रास्ते की ओर ले जा रहा हो. कठिन समय हमारी कहानी का अंत नहीं होता, बल्कि वह केवल उसका एक अध्याय होता है. जीवन में ऐसे क्षण भी आते हैं जब लगता है कि कुछ भी हमारे पक्ष में नहीं हो रहा. हम लगातार मेहनत करते हैं, लेकिन सफलता दिखाई नहीं देती. बार-बार प्रयास करते हैं, फिर भी अपेक्षित परिणाम नहीं मिलता. हम अपने सपनों को थामे रहते हैं और परिस्थितियाँ हमारा साथ देने से इनकार करती प्रतीत होती हैं. ऐसे समय सबसे पहले हमारा आत्मविश्वास टूटने लगता है.लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि धीमी यात्रा भी यात्रा ही होती है. धीरे चलने का अर्थ यह नहीं कि हम रुक गए हैं.

सफलता केवल प्रतिभा से नहीं मिलती. अधिकांश अवसरों पर सफलता निरंतरता का परिणाम होती है. बहुत से लोग शानदार शुरुआत करते हैं, लेकिन यात्रा कठिन होने पर रुक जाते हैं. वहीं कुछ लोग धीरे-धीरे, शांतिपूर्वक और लगातार आगे बढ़ते रहते हैं. वे हार मानने से इनकार करते हैं. अंततः अक्सर वही लोग मंजिल तक पहुँचते हैं जो चलते रहना जानते हैं.इसलिए संसाधन सीमित हों तो भी शुरुआत कीजिए. आपका नाम कोई न जानता हो तो भी काम करते रहिए. आज आपकी मेहनत की सराहना न हो रही हो, तब भी अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित रहिए. हर महान कहानी की शुरुआत कभी बहुत छोटी होती है. पहला कदम उठाना महत्वपूर्ण है, लेकिन उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कठिनाइयों के बावजूद रास्ते पर बने रहना. शुरुआत करना आसान है, लेकिन लंबे समय तक संघर्ष करते हुए आगे बढ़ते रहना ही असली परीक्षा है.

समय कभी एक जैसा नहीं रहता. जो आज कठिन दिखाई दे रहा है, वह कल आसान हो सकता है. जो सपना आज बहुत दूर लगता है, वह एक दिन वास्तविकता बन सकता है. जो काम आज किसी की नजर में नहीं आ रहा, वही कल आपकी पहचान बन सकता है. अपनी वर्तमान परिस्थितियों को अपने भविष्य का निर्णय मत करने दीजिए. आपकी सबसे बड़ी ताकत आपकी परिस्थितियाँ नहीं, बल्कि आपकी सोच, दृढ़ निश्चय और लगातार प्रयास करते रहने की इच्छा है. जब आप निरंतर मेहनत करते हैं, सीखते हैं, गिरते हैं, फिर उठते हैं और दोबारा प्रयास करते हैं, तब आप केवल अपनी मंजिल के करीब नहीं पहुँच रहे होते, बल्कि स्वयं को अधिक मजबूत बना रहे होते हैं. हर असफलता कुछ सिखाती है. हर संघर्ष हमें सहनशील बनाता है और हर कठिनाई भविष्य की बड़ी जिम्मेदारियों के लिए तैयार करती है. इसलिए असफलता से मत डरिए. आज गिर गए हैं तो फिर उठिए. एक रास्ता बंद हो जाए तो दूसरा खोजिए. कोई आपको अस्वीकार कर दे तो स्वयं पर विश्वास करना सीखिए. दुनिया आज आपको न पहचाने तो भी अपनी क्षमताओं पर भरोसा बनाए रखिए. आपकी कीमत इस बात से तय नहीं होती कि इस समय दुनिया आपके बारे में क्या सोचती है. आपकी वास्तविक पहचान इस बात से बनती है कि आप अपने सपनों को कितनी ईमानदारी और दृढ़ता के साथ पूरा करने का प्रयास करते हैं.

शायद यही इस पंक्ति का सबसे सुंदर संदेश है. एक नदी छोटी-सी धारा के रूप में शुरू होती है, लेकिन उसकी निरंतर यात्रा उसे समुद्र तक पहुँचा देती है. उसी प्रकार किसी व्यक्ति की शुरुआत साधारण हो सकती है, लेकिन मेहनत, धैर्य और विश्वास उसे उसकी कल्पना से भी कहीं आगे ले जा सकते हैं. छोटी शुरुआत करने में कभी शर्म महसूस मत कीजिए. हर बड़ी उपलब्धि कभी एक छोटी शुरुआत ही थी. जहाँ हैं, वहीं से शुरुआत कीजिए. जो आपके पास है, उसका उपयोग कीजिए. जितना कर सकते हैं, उतना कीजिए लेकिन रुकिए मत .एक दिन आप पीछे मुड़कर देखेंगे और महसूस करेंगे कि जिन दिनों को आपने अपने जीवन का सबसे कठिन समय समझा था, वही दिन आपको आपकी मंजिल के सबसे करीब लेकर आए थे.

आज संघर्ष है तो उसे स्वीकार कीजिए. सफलता आने में समय लग रहा है तो समय को अपना काम करने दीजिए. परिणाम अभी दिखाई नहीं दे रहे हैं तो अपने प्रयासों को मत छोड़िए. बस चलते रहिए. नदी को समुद्र तक पहुँचने में समय लगता है, लेकिन क्योंकि वह बहना नहीं छोड़ती, इसलिए एक दिन वह समुद्र तक पहुँच ही जाती है. आपकी मेहनत भी एक दिन अपने परिणामों से मिलेगी. आपका सपना भी एक दिन आपकी वास्तविकता बन सकता है. स्वयं पर विश्वास रखिए. धैर्य रखिए. प्रक्रिया पर भरोसा कीजिए और अपने रास्ते पर चलते रहिए.

क्लास by बड़े भाई

रूचि और आजीविका के बीच संतुलन बनाइए

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, अभी कुछ दिन पहले मेरा एक निजी कम्पनी के कर्मचारियों को उनके कार्यक्षेत्र में काम आने वाली कुछ जरुरी स्किल्स की ट्रेनिंग देने जाना हुआ था.. लगभग चार घंटे चली ट्रेनिंग के बाद ज्यादातर लोगों का सवाल था कि .. मैं पसंद कुछ और करता हूँ लेकिन आजीविका के लिए कुछ और करना पड़ रहा है.. कई लोगों ने अपनी आजीविका को चुनकर रूचि का बलिदान कर दिया था और संतुष्ट थे.

छोटे भाई, यह सवाल केवल उनका नही है बल्कि यह सवाल और दुविधा, बहुत लोगों के सामने है कि दोंनो में संतुलन कैसे बिठाएं.. आज हम इसी पर थोड़ी बात करेंगे.

पहली बात, जिस काम में हमारी रूचि है यदि उससे हमारी आजीविका चलती है तो इससे बढिया क्या होगा.. आपको काम, काम लगेगा ही नही.. आप वही कर रहे होंगे जिसे करते हुए आप कभी थकते नही हैं.. जैसे कि गायकी, पेंटिंग, टीचिंग या कोई भी काम जिसमे आपकी रूचि हो..

दूसरी बात, कई बार हमारी रूचि, हमारी आजीविका नही बन सकती.. जैसे हमारी फूटबाल खेलने में लगाव है.. वो हमें अच्छा लगता है लेकिन हमारे पैर किसी वजह से इतने मजबूत नही हैं..या उनमें कुछ दिक्कत है तो फुटबॉल हमारी आजीविका का साधन कैसे बन सकता है.. तब हमारी आजीविका का साधन तो कुछ और ही देखना पड़ेगा..

कहने का मतलब रूचि हमारी कई हो सकती हैं लेकिन किसी रूचि को आजीविका बनाने के लिए जो जरुरी स्किल और रिस्क चाहिए.. यदि वो नही है तो वो रूचि आपकी आजीविका नही बन सकेगी.. जैसे इंजीनियरिंग में आपकी रूचि है लेकिन यह स्थायी आजीविका बन सके इसके लिए आपके पास इंजीनियरिंग की डिग्री डिप्लोमा तो होना चाहिए..

इसलिए जो आप कर रहे हैं उससे निराश मत रहिये बल्कि यह सोचिये कि कम से कम कोई स्किल ऐसी है आपके पास कि उससे आपकी अजीविक्का चल रही है.. बहुत लोगों के पास यह नही है.. हाँ, आपकी रूचि की ओर जाने के लिए जो चाहिए, उसके लिए साथ में प्रयास करते रह सकते हैं..

छोटे भाई, जो भी कर रहे हैं उसमें खुश रहना सीखिए और जो चाहते हैं उसके लिए बिना बेचैन हुए प्रयास करते रहिये.. मुझे यही इसका संतुलन उचित लगता है.. जीवन को भीतर से आनंद की पटरी से कभी उतरने मत दीजिये..

लघुकथा

परेशानी

बसंत राघव

गली के नुक्कड़ पर तीन लोग खड़े थे. पहले ने जेब में हाथ डालकर नोटों की गड्डी टटोली. पैसे तो सुरक्षित थे, पर मन असुरक्षित. उसे डर था – कहीं चोरी न हो जाए, कहीं घाटा न हो जाए या कोई उधार न मांग बैठे. धन ने उसे सुख कम, चिंता अधिक दे रखी थी.

दूसरे की जेब खाली थी, मगर मन कर्ज के बोझ से भारी था. महीने की तारीखें उसकी नींद उड़ा देती थीं. कहाँ से लाऊँगा, कैसे चुकाऊँगा? – यही उधेड़बुन उसे दिन-रात बेचैन किए रहती थी.

तीसरा अलग ही मिट्टी का था. न पास पैसा था, न सिर पर कर्ज. उसे न संचय का लालच था, न लौटाने की फिक्र. जो रूखा-सूखा मिल जाता, उसी में तृप्त रहता. उसकी आँखों की बेफिक्री और हँसी का सुकून उसकी संपन्नता बयां कर रहे थे.

तभी वहाँ से एक चौथा गुजरा. उसने तीनों को देखा और अपने साथी से कहा, देखो इस तीसरे को! इसके पास तो कुछ भी नहीं है, फिर भी इतना बेफिक्र कैसे है? समझ नहीं आता कि इसका गुजारा होता कैसे होगा!

तीसरा यह सुनकर मुस्कुराया और आगे बढ़ गया. उसे अपनी इस मुक्ति का राज पता था. पीछे नुक्कड़ पर बाकी तीनों अपनी-अपनी परेशानियों और जिज्ञासाओं के जाल में अब भी उलझे खड़े थे.

निर्विकल्प से निराकार की साधना

संदीप खमेसरा

कपड़े खरीदने गए. अलग अलग डिजाइन और कलर के सैकड़ों विकल्प प्रस्तुत किए गए. हम भ्रमित हो गए! कई सारे अच्छे लग रहे हैं. कौन सा चुनें? ढेर सारे विकल्प यानी, ढेर सारा भ्रम!

हमारा सारा जीवन विकल्पों से भरा पड़ा है. खाने में क्या होना चाहिए, पहनने में क्या, गाड़ी कौन सी, मोबाइल किस कंपनी का, ओटीटी पर सीरीज या पिक्चर कौन सी देखें, किस रेस्टोरेंट में जाएं, ट्रिप कहां की प्लान करें....बहुत से विकल्पों में उलझे पड़े हैं हम! चार लोगों के परिवार में, अब विकल्पों के चुनाव भिन्न भिन्न होने से ही क्लेश हो जाता है. पंद्रह दिन या महीने में किसी एक दिन, बाहर खाना खाने जाना हो तो सभी लोग एकमत नहीं हो पाते! पूरा जीवन इस खींचातानी में ही गुज़र जाता है. देश, काल और परिस्थिति के अनुसार श्रेष्ठ चुनने का प्रयास करते हैं, लेकिन जल्द ही वह आउट डेटेड हो जाता है. इसका अंत कहीं होता नहीं.

बहुतेरे विकल्प भ्रम और फिर भ्रम, तनाव पैदा करते हैं. तनाव, एक विकार बन जाता है. आध्यात्म का मार्ग जीवन को बेहतर बनाए रखने का मार्ग है. सूक्ष्म रूप से जीवन जिन चीज़ों से प्रभावित हो रहा होता है, उन्हें सही तरह से समझना, परखना और स्वयं की सोच का हिस्सा बना पाने का एक बड़ा आयाम भी प्रदान करता है- आध्यात्म.

मार्ग कोई भी चुने साधक. भक्ति, सेवा, नामजप, मौन या ध्यान, एक समर्थ परीक्षक की भांति समय समय पर यह परीक्षण भी करे कि कुछ

वाकई बदल भी रहा है, अथवा नहीं! *स्वयं की प्रकृति में बदलाव को परख पाना एक बहुत बड़ी चुनौती है.* दृष्टि अन्यों से हट कर स्वयं पर पड़ने लगे और ईमानदारी से आंकलन हो, तो ही बदलाव संभव भी है. प्राकृतिक रूप से, जिन वृत्तियों के बंधनों से हम बंधे हुए थे, धर्म और आध्यात्म के मार्ग पर कई कई वर्षों चलने के बाद भी वैसे के वैसे हैं, तो इसका अर्थ है कि हमारी कोई विशेष गति या रूपांतरण हो नहीं पा रहा है.

आध्यात्मिक यात्रा में हमारी गति हो रही है अथवा नहीं, इसे जांचने के कुछ पैमाने हो सकते हैं. जीवन, कुछ *निर्विकल्पता* का आयाम छूने लगा है या नहीं, यह एक जांच की जा सकती है. साधना के मार्ग पर चलते चलते, हम अभी भी चॉइसेज़ की गिरफ्त में हैं या कहीं निर्विकल्पता सध रही है. चिंतन और आत्मावलोकन करते रहने पर अंतर स्पष्ट दिखाई देगा.

निर्विकल्प हो पाना, साधना का एक बड़ा पड़ाव है. यह तब घटित हो सकता है, जब चित्त में सहज स्वीकृति का भाव जागृत होने लगे. स्वार्थ का हो या ना हो, मन का हो या ना हो, बिना विशेष प्रतिक्रिया के उस स्थिति को साक्षी भाव से देख भर लेना, यही सहज स्वीकार की स्थिति है और कालांतर में यही निर्विकल्प स्थिति का मार्ग प्रशस्त करती है. सही और गलत कुछ होता ही नहीं. किसी की दृष्टि में जो सही है, वह अन्य की दृष्टि में गलत हो सकता है. जब तक देखने की यह नज़र पैदा नहीं होती, स्वीकार का भाव नहीं जन्म ले सकता!

निर्विकल्प हो जाना जीवन को कैसे सिद्ध कर सकता है?

निर्विकल्प हो जाने से द्वंद मिटता है. जब विकल्प ही नहीं, तो चुनाव का द्वंद्व ही क्यों? निर्विकल्पता की साधना से निर्द्वन्द्वता परिपक्व होने लगती है. जब द्वंद्व समाप्त होता है, तो विचार की आवाजाही कम होती है. स्पष्टता और निर्विचारिता घटित होती है. मन के विचार भी एक प्रकार का कर्म ही है. यह कर्म हमारी प्रकृति में नित्य परिवर्तन कर रहा होता है. विचार का अभाव जैसे ही होने लगता है, एक बड़े कर्म बंधन से मुक्ति मिलने लगती है. यह मुक्ति धीरे धीरे साधक को निर्दोष बनाती है. निर्दोष साधक, तन और मन की सीमाओं से पार हो निराकार चेतना से सामंजस्य स्थापित करने की स्थिति में आ जाता है. उसका सम्पूर्ण जीवन पारदर्शिता की पराकाष्ठा पर पहुंच जाता है, जहां उसके स्थूल स्वरूप और चेतन स्वरूप में कोई भेद रहता ही नहीं. वह स्वयं निराकार की तरह सिद्ध हो जाता है. भगवान महावीर और तथागत बुद्ध ने सहज स्वीकृति का जो मार्ग सुझाया, वह किस मंज़िल पर हमें पहुंचा सकता है यह स्पष्ट है. साधक, जागृति के चरम तक पहुँचे, दृष्टि संसार पर नहीं, स्वयं पर हो, दृष्टि में दोष नहीं स्पष्टता हो तो इस युग में भी निर्विकल्प से निराकार की यात्रा का संयोग सिद्ध हो सकता है!

कैनवास पर उतरी प्रकृति की खूबसूरती

भरत जोशी

- 30 से अधिक देशों में फैला 'पिनाकी पैलेट' का नाम
- भक्ति और प्रकृति के जीवंत रंगों अद्भुत संयोजन

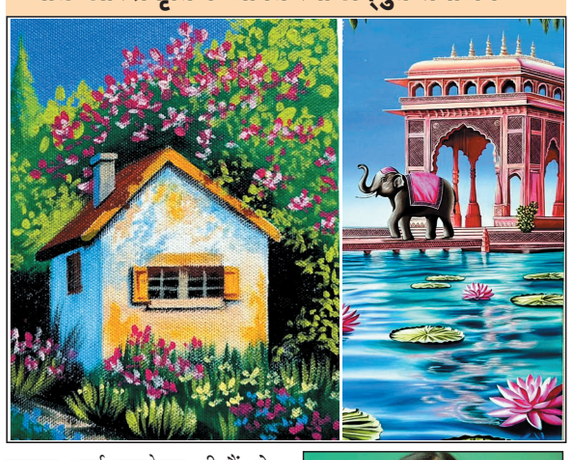

इंदौर. स्वच्छता और खान-पान के साथ-साथ अब इंदौर कला और संस्कृति के क्षेत्र में भी नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है.

विजय नगर की रहने वाली प्रतिभाशाली कलाकार और आर्ट एजुकेटर आयुषी भट्टर पिछले 5 वर्षों से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी कला का परचम लहरा रही हैं. अपने डिजिटल और आर्ट प्लेटफॉर्म 'पिनाकी पैलेट' के माध्यम से वह देश-विदेश के कला प्रेमियों के बीच खास पहचान बना चुकी हैं.

आयुषी की पेंटिंग्स मुख्य रूप से प्रकृति के सौंदर्य, रंगों और आध्यात्मिक विषयों से प्रेरित होती हैं. उनके कैनवास पर भगवान श्री गणेश का सौम्य रूप, भगवान शिव का तेजस्वी स्वरूप, और भारतीय वास्तुकला व शांत जल में खिलते कमल के फूल जैसे दृश्य जीवंत हो उठते हैं. उनकी बनाई पेंटिंग्स को दुनिया भर के आर्ट लवर्स द्वारा खूब पसंद और खरीदा जा रहा है.

30 से अधिक देशों के हजारों विद्यार्थियों को दे रहीं प्रशिक्षण- एक सफल आर्टिस्ट होने के साथ-साथ आयुषी एक कुशल आर्ट एजुकेटर भी हैं. वे अब तक 30 से अधिक देशों के हजारों छात्र-छात्राओं को पेंटिंग और कला की सूक्ष्म बारीकियां सिखा चुकी हैं.

माता-पिता का संबल और रचनात्मकता का संदेश- अपनी इस सफलता का श्रेय आयुषी अपने माता-पिता के अटूट सहयोग और प्रोत्साहन को देती हैं. आयुषी का कहना है कि हर इंसान के अंदर एक कलाकार छिपा होता है. वह अपने शिक्षण और पेंटिंग्स के जरिए युवाओं और

कला प्रेमियों को अपनी रचनात्मकता पहचानने और जुनून का पीछा करने के लिए प्रेरित करती रहेंगी.

उपन्यास बड़ी विधा लेकिन उसे साधना उतना ही ज्यादा कठिन

ढाई इंच पर दौड़ती जिंदगी के विमोचन अवसर पर सार्थक चर्चा

उपन्यास नि:संदेह एक बड़ी विधा है लेकिन उसे साधना बहुत कठिन प्रक्रिया है. सिर्फ कथ्य के स्तर पर नहीं, कथारस की रोचकता से पाठक को बार-बार चौंकाना पड़ता है. धार के उल्टा तैरना पड़ता है. तब कोई उपन्यास बड़ा बन पाता है. यह बात कथाकार मनीष वैद्य ने संतोष सुपेकर के पहले उपन्यास ढाई इंच पर दौड़ती जिंदगी के विमोचन अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में कही. उन्होंने कहा कि यह उपन्यास हमारे संवेदनहीन होकर मशीन में बदलते जा रहे मनुष्य की पहचान और उसकी मनुष्यता को शिद्दत से रेखांकित करता है. इसमें लोको पायलटों के कठिन जीवन, अंतर्बाह्य संघर्ष और पीड़ा को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है.

प्रेमचन्द सृजन पीठ उज्जैन और सरल काव्यांजलि के तत्वावधान में प्रेस क्लब उज्जैन में आयोजित इस समारोह में समालोचक प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा ने कहा कि यह उपन्यास हिंदी कथा साहित्य में एक नई जमीन तोड़ता है आम आदमी और किसान पर तो बहुत लिखा गया है, पर लोको पायलट के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक संघर्ष पर यह एक दुर्लभ कार्य है. यह कृति रेलकर्मियों के जरिए

आयोजन

मनुष्य की अविराम जिजीविषा और कभी न रुकने वाले कदमों का प्रवाहमय वृत्तांत है. राजेश सिंह कुशवाह ने कहा कि यह कृति लोको पायलट की कठिन सेवा और उनके रोमांचकारी विचित्र अनुभवों का निचोड़ है. मालवी कवि डॉ. शिव चौरसिया ने कहा कि लेखक ने रेल की जिन्दगी में डूबकर अपने सफर को शब्दों में बखूबी व्यक्त किया है.

विशेष अतिथि मनीष शर्मा ने कहा कि रेल का आकर्षण हमारे अवचेतन में रहता है मगर लेखक ने रेल का दूसरा पक्ष इस उपन्यास में रखा है. स्वागत भाषण देते हुए प्रेमचंद सृजन पीठ के निदेशक मुकेश जोशी ने कहा कि लघुकथाकार सुपेकर अब उपन्यास लेखन के लिए भी जाने जायेंगे. आयोजन में डॉ. राजशेखर व्यास, डॉ.जगदीश शर्मा, डॉ. विश्वामित्र राय, डॉ. उर्मि शर्मा, डॉ. प्रीति जोशी, डॉ. रश्मि मोयदे, डॉ. पांखुरी वक्त, डॉ.वंदना गुप्ता, आशागंगा शिरढोणकर, राजेश ठाकुर, आशीष अश्क, संदीप सृजन, सुगनचंद जैन, मोहन बैरागी तथा भूषण जैन उपस्थित रहे. संचालन डॉ. हरीशकुमार सिंह ने किया और आभार नितिन पोल ने माना.

गज़ल

चाँद सोनी

तू ही तो गम शनास है या रब
मुझको तुझसे ही आस है या रब

मेरी आँखों के खुश्क दरिया को
चंद अश्कों की प्यास है या रब

मेरा ग़म देख के जमाने की
हर खुशी क्यों उदास है या रब

तू ही हमको बचा गुनाहों से
तेरी दुनिया में आस है या रब

सर छुपाऊं या हाथ फैलाऊं
तेरा दर ही मवास है या रब

इश्क की डोर टूट जाए ना
आज उनसे तमास है या रब

ईद के दिन भी वो नहीं आया
चाँद यूं भी उदास है या रब

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी